रहस्यवाद Paper III

प्रश्न 4 → रहस्यवाद के उद्भव और विकास को दर्शाते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें?

अथवा

रहस्यवाद और रहस्यवादी कवि।

उत्तर → हिन्दी काव्य में आदि काल से ही रहस्यवाद की परम्परा चली आ रही है। सिद्ध और नाथ योगियों ने अपने काव्य का साधनात्मक रहस्यवाद की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। रहस्यवाद मूलतः संस्कृत के रहस्य और वाद से बना है। हिन्दी में यह शब्द अपने वर्तमान अर्थ में संस्कृत से गृहीत होकर अंग्रेजी भाषा के mysticism (मिस्टीसिज्म) के अर्थ में इसी के तौल पर प्रयुक्त होने लगा है। अंग्रेजी का "मिस्टिक" या मिस्टीसिज्म शब्द यूनानी धातु मुस्टीस (mustis) या मिस्टीस (mystis) से उत्पन्न है।

इसका अर्थ है जीवन मरण के रहस्यों को जानने के लिए दीक्षित व्यक्ति। मिस्टीक शब्द (ism) इज्म लगाकर मिस्टीसीज्म शब्द बना है। इसका शाब्दिक अर्थ रहस्यवादिता हो सकता है। व्याकरण की दृष्टि से रहस्यवाद और रहस्यवादिता में कोई अंतर नहीं है।

इस चराचर विश्व का निर्माण करने वाली उस अव्यक्त सत्ता की खोज मानव प्राचीन काल से करता फिरता आया है। उसे जगत की विभिन्न परिक्रियाओं को संचालित करने वाली उस सत्ता का आभास होता रहा है परन्तु वह निश्चित रूप से यह नहीं कह सका कि वह कौन है, स्वरूप कैसा है, वह कहाँ

कहा करती है और परिवर्तन का निगमन भी करती है। अनादि-काल से लेकर आज तक वह इस रहस्य को समझने का प्रयत्न करता आया है परन्तु अब तक अपने इस प्रयत्न में सर्वथा असफल रहा है।

"पाना अलभ्य को जग की यह कैसी अभिलाषा? कुछ और अप्राप्य इसी से सब करते इसकी आशा।"

इस अप्राप्य कुछ को प्राप्त करने के लिए मानव स्वयं निरंतर जो प्रयत्न करते आया है, वे सब रहस्यवाद में आ जाते हैं। साहित्य में रहस्यवाद का दो स्थूल रूपों में प्रयोग होता है।

1. साहित्य समीक्षा अथवा काव्य शास्त्र के क्षेत्र में वह एक सिद्धांत है जिसमें रहस्य को काव्य तत्व मानकर विवेचना की जाती है कि किस काव्य में रहस्य तत्व की व्यंजना हुई है और किसमें नहीं। "रहस्य" तत्व अपने सहारे की परम्परा से गृहीत होगा पर वाद के अधीन यह समस्त विवेचना काव्यशास्त्र है।

2. काव्य सर्जना के क्षेत्र में " वाद का अर्थ भाषा विशेष प्रवृति, विशेष और सही विशेष होगा। प्रसाद जी ने रहस्यवाद को काव्य की मुख्य धारा कहकर इसकी व्याप्ति वैदिक काल से अविछिन्न मानी है। रहस्यवाद के मुख्य तीन अंग है :—

(i) मानव प्रेम (ii) आश्चर्य का भाव

(iii) आत्मा की परमात्मा से विरहानुभूति।

तुलसी और कबीर के रहस्यवाद में इसी मानव प्रेम में अभिव्यक्ति के रहस्य की भावना मिलती है। तुलसी इसी के कारण "सिया राम मै सब जग" मानकर प्राणी मात्र की उपासना करते है।

आश्चर्य भाव

भक्त को बालक के समान अबोध बना देता है। तुलसी का प्रसिद्ध पद "केशव कहि न जाय का कहिये" इसी आश्चर्य भाव का प्रतीक है।

रहस्यवाद के सोपान → इसके पाँच सोपान माने गए हैं — (i) प्रभु के प्रति जिज्ञासा कौतूहल अथवा विस्मय की भावना।
(ii) प्रभु का महत्व और उसकी अनिर्वचनीयता।
(iii) प्रभु के दर्शन का प्रयत्न
(iv) प्रभु के प्रति विभिन्न सम्बन्धों की उद्भावना।
(v) प्रभु से एकाकारिता।

किन्तु अधिकांश विद्वान रहस्यवाद की क्रम से तीन ही कोटियाँ स्वीकार करते हैं —

प्रथम अवस्था में साधक के अंदर असीम सत्ता गुरुता की जिज्ञासा उत्पन्न होती है वह प्रकृति के रूप सौन्दर्य तथा जगत् के कार्य कलापों में अन्तर्निहित किसी अलौकिक शक्ति को जानने का प्रयत्न करता है और सदैव वह उसके विरह में तड़पता रहता है।

रहस्यवाद की दूसरी अवस्था वहाँ आती है जहाँ साधक असीम सत्ता से प्रेम करने लगता है। उसकी भावनाएँ इतनी तीव्र हो जाया करती हैं कि वह एक प्रकार का पागलपन अनुभव करने लगता है।

2 प्रेम की इस दशा में आत्मा अपने भौतिक अस्तित्व से ऊपर उठ जाती है। इस प्रेम भावना के कारण भौतिक तथा अलौकिक जीवन में सहज ही सामंजस्य प्रस्तुत हो जाता है। यहाँ अन्तर जगत और बाह्य जगत दोनों एक दूसरे से मिल जाते हैं। अद्वैतवादी इसे "आत्म ज्ञान" की अवस्था को प्रिय मिलन की तथा सूफी फना की स्थिति कहते हैं।

तीसरी कोटि में साधना

A

चरम सीमा पर पहुंच जाती है। यहाँ आत्मा परमात्मा में ही लीन हो जाती है। यहाँ से पहुंचकर आत्मा का पृथक अस्तित्व समाप्त हो जाता है। और वह परमात्मा के साथ एकाकार हो जाती है। इस स्थिति में वह साधक की परमात्मा के गुणों को अपने पर आरोप कर लेती है। इस अवस्था को प्राप्त कर वह उससे मिल नीर क्षीर की भांति एकाकार रूप हो जाती है। ऐसी अवस्था में कबीर के शब्दों में ——

आतमलीन अखंडित रामा
कहै कबीर हरि माहीं समाना"।

तादात्म्य स्थिति हो जाती है
यही रहस्यवाद की अंतिम स्थिति होती है
निराला के शब्दों में ——

"तौ न हमके पास है वह"

Scanned with CamScanner